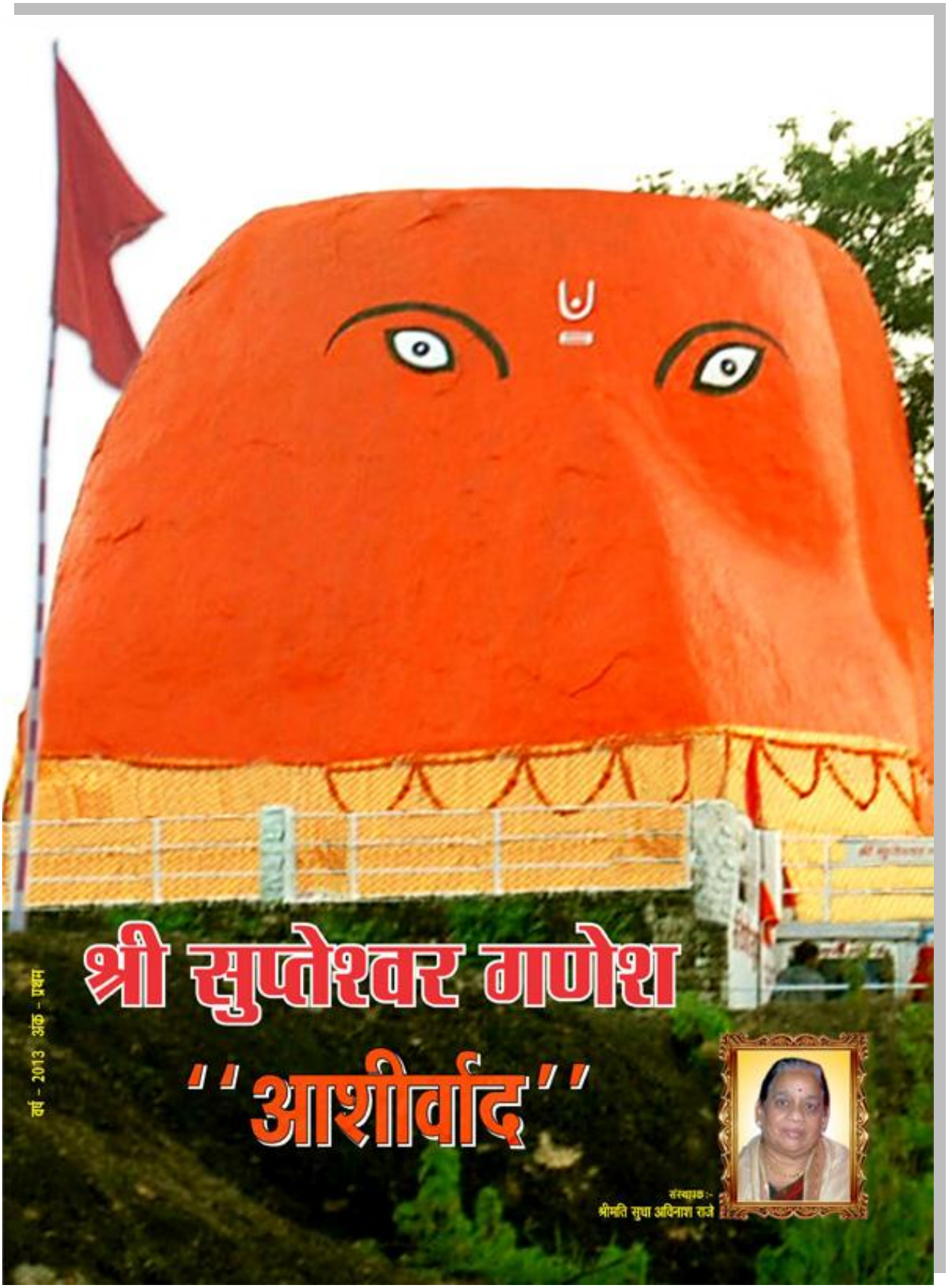

श्री सुप्तेश्वर गणेश
''आशीर्वाद''
वर्ष - 2013 अंक - प्रथम
संस्थापक :-
श्रीमति सुधा अविनाश राजे

श्री गणेशाय नमः

वक्रतुण्ड महाकाय,
सूर्य कोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरूमे देव,
सर्व कार्येषु सर्वदा ।।

पं. ओम प्रकाश द्विवेदी
पुजारी

*** परिचय ***

नाम : श्रीमति सुधा अविनाश राजे

पति : श्री अविनाश द. राजे

जन्म स्थान/तिथी : 22 दिसम्बर 1943, नागपुर

-: संस्थापक :-
श्रीमति सुधा अविनाश राजे

श्री सुप्तेश्वर गणेश (सिद्धी विनायक) कल्की निज मूर्ति

सन् 1985 मुझे स्वप्न में एक बहुत विशाल काय काष्ठ (लकड़ी का) दरवाजा उसमें से एक तेज पुंज नीले पीताम्बर, पीले रंग का शेला (दुपट्टा) गले में जनेऊ और सिर पर मुकुट धारण किये बहुत विशाल रूप में गणेश जी प्रकट हुये और भारी जनसमूदाय के बीच से मुझे (मैं सुधा अविनाश राजे) हाथ से इशारा कर पास बुलाया और मस्तक मेरी ओर बढ़ा कर कहा मुझे तिलक करों, मैंने तिलक रोली अक्षत लगाई और वे अर्न्तध्यान हो गया तभी मेरी नींद टूट गई।

27 दिसम्बर 1988 रात में मुझे स्वप्न में जोर-जोर से छैनी-हथौड़ी की आवाजें, डायनामाइट फटने की आवाज चट्टाने पहाड़ियाँ फोड़ी जा रही है की आवाजें आने लगीं। इसी बीच एक पहाड़ी पर साक्षात गणेश जी विराजमान है और मुझे आदेश दे रहे हैं कि यहाँ मेरी स्थापना करों।

करीब पन्द्रह दिन बाद फिर आधी रात में वहीं स्वप्न वहीं दृष्य चट्टानें गिर रही है डायनामाइट लगा रहे हैं दिखा और गणेश जी कह रहे हैं मेरी स्थापना करो और मेरी नींद टूट गई ..... मैंने अपने पतिदेव से बार-बार आ रहे स्वप्न के बारे में बताया परउनका कहना था कि जबलपुर में अनगिनत पहाड़ियों पर गणेश जी किस पहाड़ी पर है पता करना बड़ा कठिन है तुम उन्हीं से पूछो। इधर मेरी अस्वस्थता (मन की) बढ़ती जा रही थी मैंने गणेश जी से प्रार्थना कि ईश्वर कुछ मदद करों मुझे मार्ग दर्शन करो कहां जाना है आप किस पहाड़ी पर हैं इस तरह सोते समय मैं रोज प्रार्थना करने लगी।

जनवरी 1989 चतुर्थी को स्वप्न में मुझे सचमुच रास्ता (मार्ग) दिखाया और अर्न्तध्यान हो गये, तब मैं प्रेम नगर पोस्टऑफिस के पास रहती थी। फरवरी 4, 1989 मैंने पतिदेव के साथ जाकर वो जगह ढूंढने लगी और हमें वह जगह मिली वही शिला जो स्वप्न में दिखी थी, सामने थी। अब वहाँ पर कहाँ पर गणेश जी होंगे सोचते हुये झाड़ियों के आस-पास तलाशने लगी। तभी वो स्वंय विशाल काय शिला ही गणेश जी जैसे लगी और हमें साक्षात गणेश जी मिल गये ।''स्वयं-भू'' गणेश इतने बड़े रूप में देख कर मेरे आँखों से आनन्द अश्रु बहने लगे इस टेकरी के बाजू में नई बसी एकता विहार कालोनी है।

हमने आस-पास के बंगलो में बताया कि इनकी स्थापना करनी है सिंदूर करना है। फिर आस-पास साफ-सफाई करके थोड़ा-थोड़ा कार्य शुरू किया पर बाकी लोगों ने ज्यादा सहयोग नहीं दिया हम लोगों का प्रयन्त सतत रहा।

सितम्बर 4, 1989 को गंगाजल, नर्मदा जल से अभिषेक किया सिंदूर व घी लगाकर स्थापना करके पूजा आरम्भ की तो धीरे-धीरे दस-पन्द्रह मिनिट में दो सौ-ढाई सौ लोग एकत्रित हो गये। फिर धीरे-धीरे लोगों का आने का सिलसिला चालू हो गया। (जो आज तक जारी है।)

विशाल काय शिला याने गणेश जी का चेहरा, वाहन अश्व है। जो भारत वर्ष मध्य भाग में स्थित नर्मदा नदी के किनारे जबलपुर शहर में पहाड़ी के ऊपर प्रकट हुये हैं। श्री गणेश जी का संदेश है कि संसार में लोग बहुत गर्विष्ठ हो गये हैं। मदोन्मत लोगों के पाप से धरती पर बोझ बढ़ रहा है निरअपराध और साधारण लोगों के हितार्थ मैंने यह अवतार लिया है सब मिलजुल कर रहे और मेरी उपासना करें। प्रगति के सर्वोच्च शिखर पहुँचें मानव को अहंकार हो गया है समस्त मानव जाती आज विनाश कि सीमा रेखा पर खड़ी है उसी के द्वारा निर्मित अस्त्र आज उसी के विनाशक बन गये हैं। इससे पृथ्वी के नष्ट होने का खतरा बढ़ गया है। इसे रोकने मैं आया हूँ। युद्ध से कभी किसी का भला नहीं हुआ है युद्ध से चारों ओर आकांत और राख के सिवा क्या मिला है ? क्या तुम आने वाली पीढ़ी को ऐसी पृथ्वी दिखाना चाहते हो मेरे द्वारा निर्मित पृथ्वी के इस अमानवीय रूप को देख कर मुझे उद्देग होता है ..... काश तुम मेरे अदृष्य आंसू देख पाते .....

श्री सुप्तेश्वर विकास समिति का गठन

श्री सुप्तेश्वर विकास समिति का गठन वर्ष 2009 के शुरूआत में श्री सुप्तेश्वर परिसर में हुआ तब उसमें कुछ 6-8 भक्तों ने मिल-जुलकर श्री सुप्तेश्वर विकास समिति का गठन किया एवं क्षेत्र में भ्रमण कर स्थानिय निवासियों से समिति में सदस्य के रूप में शामिल होने का आग्रह किया। यह सिलसिला लगातार चलता रहा फलस्वरूप 2009 के आखिरी पड़ाव पर यह सदस्य संख्या 6-8 से बढ़कर 30-35 हो गयी जो लगातार बढ़ रही है।

श्री सुप्तेश्वर विकास समिति का गठन किया गया और विकास के कार्यों को करने के लिये समिति सक्रिय हो गई जो आज भी लगातार प्रयासरत है और विविध धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन किये जाते हैं, **मुख्य रूप से श्री गणेश पर्व अत्यंत धूम-धाम से मनाया जाता है।**

मेरा स्वरूप

मैं गणपति निज मूर्ति रूप में प्रकट हुआ हूँ मेरा वाहन सफेद अश्व है (जैसा नीचे मंदिर में है) पर वह अदृष्य है। मैं केवल चेहरे तक दृष्य हूँ बाकी पृथ्वी के अंदर हूँ। मेरी मूर्ति इस रूप में है इसी रूप में रहने दें परिवर्तन न करें मैं यहाँ सदैव रहूँगा। मेरे संदेश पर चलकर लोगों के विचारों में परिवर्तन आयेगा तथा पृथ्वी का लय नहीं होगा।

जो मेरे इस रूप पर घी, सिंदूर लगायेगा उसे मेरा सदैव आशीर्वाद रहेगा। जैसे-जैसे श्रद्धालू दर्शन को आयेंगे जबलपुर कि कीर्ति बढ़ेगी।

भगवान का अवतार क्यों होता है

भगवान सर्वथा पूर्ण, सर्वशक्तिमान और स्वतंत्र हैं। श्रीमद् भागवद् गीता के अनुसार एवं रामचरित मानस के माध्यम से महा कवि तुलसीदास ने भगवान के अवतार के तीन कारण अर्थात् हेतु बतलायें हैं।

1. साधुओं का परित्राण
2. दुष्टों का विनाश
3. धर्म की स्थापना

दुष्टों का विनाश और धर्म की स्थापना तो बिना अवतार के भी कर सकते हैं और करते भी है यदि यह दोनों कारण खास होते तो वर्तमान में भी यही दो कारण अत्याधिक सामने दिखाई दे रहे हैं अत : इस समय भी भगवान का अवतार हो जाना चाहिये था। परन्तु भगवान की लीलाओं पर विचार एवं चिंतन करने पर पता चलता है कि भगवान अवतार क्यों लेते हैं। भगवान अपनी रसमयी लीला के द्वारा भक्तों को रस प्रदान करने के लिये और स्वयं उनके प्रेमरस का पान करने के लिये अवतार लेते हैं।

साधु पुरूष वही है जो भगवान को प्राप्त करना चाहता है। वह सदैव भगवत्परायण ही रहता है। किसी प्रकार का भेष बना लेने का नाम साधु नहीं है।

भगवान सदैव अवतार साधु पुरूषों के घर में ही लेते हैं। भगवान कृष्ण के अवतार पर दृष्टी डालने पर पता चलता है, उनका अवतार वसुदेव जी के घर में माता देवकी के उदर से हुआ। जो स्वयं प्रकाश और सर्वत्र बसने वाला है उसे ही वसुदेव कहते हैं एवं प्रकाशमयी ब्रह्मा विद्या का नाम ही देवकी है ब्रह्मविद्या उसे कहते जिसको को प्राप्त करने पर सुख और दु :ख सम हो जाता है जो सदैव पर के हित का चिंतन करती है निज की चाह समाप्त कर पर की चाह की पूर्ति के लिये अपना सर्वस्व अपर्ण कर दे वही नारी देवकी है। ऐसा घर परिवार ही भगवान के प्राकृट्य और अवतार का अधिकारी होता है। परन्तु यह याद रखने योग्य है कि भगवान उन को अपनी लीला का अपने प्रेम रस का पान प्रदान नहीं कराते वे तो अपने प्रेमलीला का रसपान कराने यशोदा की गोद चले जाते है कृष्ण उसी की गोद में अपनी प्रेमरसलीला प्रदान करते हैं जो सदैव अपने ''यश'' का दान करें वही नारी ''यशोदा'' है और आनंद का ही दूसरा नाम ''नंद'' है। इससे यह सिद्ध होता है कि भगवान श्री कृष्ण अपने भक्तों को अपनी प्रेममयी लीलाओं का रस प्रदान करके और उनके प्रेमरस का स्वंय आस्वादन करके उन भक्तों को आह्लदित करते हैं। यह काम बिना अवतार के नहीं हो सकता।

उन के अवतार का रहस्य स्वयं ब्रह्मा नहीं समझ सकें तो मनुष्यों की क्या सामर्थ है। लीला पर संदेह हुआ तो परीक्षा ले डाली सभी गोप एवं गाय बछड़ों को चुराकर गुफा में एक वर्ष तक छिपा रखा बाद में जाकर देखा तो वैसे ही सब कुछ पूर्ववत पाया। इस लीला में ब्रह्मा के अंहकार और संदेह का निवारण तथा गोप गोपियों की एवं गायों की ममतमयी इच्छा की पूर्ति अपने मुह से दूध पीकर पूर्ण की। एक ही लीला में भगवान के ऐश्वर्य एवं माधुर्य का प्रदर्शन हुआ। यह कार्य बिना अवतार के कैसे हो सकता था।

अत : उनकी ऐसी लीलायें हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि भगवान भक्तों को अपने प्रेमरस से सनी लीला के माध्यम से आनंद की वर्षा करने प्रकट या अवतार या जन्म लेते हैं।

''जा की रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन्ह तैसी''

इस प्रस्तुति में मेरा आशय केवल इतना है कि जिन मानुभावों को यह विश्वास नहीं कि भगवान अवतार या प्रकट होते हैं उन से मेरा कोई आग्रह नहीं, अवतार को जबरजस्ती मानों। उनके न मानने पर भी कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि अपनी मान्यता के लियसे सभी स्वतंत्र हैं।

पंडित मनमोहन प्रसाद मुद्गल, संस्थापक

आध्यात्म एंव सनातन संस्कृति पुनरूत्थान मंडल सोहागपुर

जिला होशंगाबाद (म.प्र.)

शरद जैन

राज्य मंत्री

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण,
चिकित्सा शिक्षा, आयुष
भोपाल गैस त्रासदी राहत तथा पुनर्वास,
संसदीय कार्य, मध्यप्रदेश शासन
मध्य प्रदेश विधानसभा

कार्यालय :
अ-4, नया पारिवारिक परिसर
विधायक विश्राम गृह, भोपाल
दूरभाष : 0761-2440677
0761-2650035
मो.: 9425151895

क्रमांक : /रा.मं./लो.स्वा.एवं प.क./चि.शि./आ./भो.गै.त्रा.रा. तथा पु./सं.कां./14 भोपाल, दिनांक : 26.08.2014

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि श्री सुप्तेश्वर विकास समिति, जबलपुर के द्वारा इस वर्ष 2014 में ''रजत जयंती समारोह'' गणेश पर्व पर मनाया जा रहा है। इस अवसर पर ''सुप्तेश्वर गणेश आशीर्वाद''पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। विघ्न विनाशक देवा में प्रथम पूज्य देव श्री गणेश भगवान के विभिन्न स्वरूपों एवं लीलाओं से सुसज्जित पत्रिका की पृष्ठभूमि धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत होगी। इस अवसर पर पवित्रमय वातावरण में भक्तजन भगवान श्री गणेश जी की कृपा प्राप्त करते हैं, एवं शांति सद्भाव का संदेश देते हैं। पत्रिका में प्रकाशित होने वाली धार्मिक साहित्यक सामग्री से पाठकगण निश्चित ही लाभान्वित होंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

इस पत्रिका त्यौहार के आयोजन एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं।

शरद जैन

राकेश सिंह

संसद सदस्य
(लोक सभा)
जबलपुर (म.प्र.)

सत्यमेव जयते

निवास :
20, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रोड, नई दिल्ली
फोन : 011-23071900
578, साउथ सिविल लाइन्स, जबलपुर (म.प्र.)
फोन : 0761-2410099
कार्यालय :
1910-ए, राईट टाउन, जबलपुर (म.प्र.)
फोन : 0761-2407300, 2543225
टेली फैक्स : 0761-4017799

शुभकामना संदेश

श्री गणेश उत्सव के पावन पर्व पर श्री सुप्तेश्वर गणेश मंदिर विकास समिति द्वारा 25 वें वर्ष पर श्री सुप्तेश्वर गणेश ''आशीर्वाद'' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। श्री सुप्तेश्वर गणेश भगवान के प्रागट्य एवं मूर्ति स्थापना तथा अन्य धार्मिक सूचनाओं व जानकारियों का श्रद्धालुओं तक पहुँचाने के लिए पत्रिका का प्रकाशन प्रेरणास्पद है।

पत्रिका की बहुमुखी सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें .....

(राकेश सिंह)

प्रभात साहू
महापौर

कार्यालय : 0761-2611451
निवास : 251717
फैक्स : 0761-2610839
ई-मेल : mayor_jbp@yahoo.com
नगर पालिक निगम, जबलपुर (म.प्र.)

शुभकामना संदेश

यह जानते ही मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि श्री सुप्तेश्वर विकास समिति के तत्वावधान में श्री गणेश पर्व 2014-15 के अवसर पर श्री सुप्तेश्वर गणेश आशीर्वाद पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसमें संकलित विविध रचनाओं के माध्यम से भगवान श्री गणेश के समस्त स्वरूपों की मनोवैज्ञानिक प्रस्तुतियां पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होंगी और वहीं दूसरी ओर भारतीय वैदिक परम्पराओं के अनुरूप समाज को व्यवस्थित करने के लिए यथोचित मार्गदर्शन भी मिलेगा।

अस्तु, मैं पत्रिका की बहुमुखी सुसफलताओं के लिए हार्दिक शुभकामनायें अभिव्यक्त करता हूँ।

(प्रभात साहू)
महापौर
जबलपुर

तरूण भनोत

विधायक

100, जबलपुर पश्चिम
मध्य प्रदेश विधानसभा

कार्यालय :
1101, भनोत निवास
गोरखपुर, जबलपुर (म.प्र.)
फोन : 0761-3256999
मोबाईल : 9425829999
ई-मेल : bhanottarunkumar.1971@gmail.com

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि श्री सुप्तेश्वर विकास समिति के द्वारा श्री गणेश उत्सव के आयोजन पर श्री सुप्तेश्वर ''गणेश आशीर्वाद पत्रिका'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

इसमें उल्लेखित गणेश उत्सव की धार्मिक सूचनाओं से भक्तगणों को बुद्धि के दाता माँ पार्वती पुत्र भगवान श्री गणेश जी की महिमा का गुणगान करने की प्रेरणा मिलेगी एवं वे अपने जीवन में सफलता एवं समृद्धि प्राप्त करेंगे।

मैं पत्रिका की सफलता के लिए अपनी शुभकानाऐं व्यक्त करता हूँ और पदाधिकारी और पत्रिका के सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

तरूण भनोत
(तरुण भनोत)
विधायक
100-जबलपुर पश्चिम
मध्यप्रदेश विधान सभा

दिनेश सिंह सिंगरौल

पार्षद/अध्यक्ष संभाग क्र. 2 गोरखपुर

शहीद गुलाब सिंह वार्ड क्र. 56
नगर निगम जबलपुर

फोन : 2426976 (निवास)
2492012
मोबाइल : 9425153317
निवास : शिवालय, 987,
शक्ति नगर, सुसेश्वर,
जबलपुर (म.प्र.)

शुभकामना संदेश

संस्कारधानी में शहीद गुलाब सिंह वार्ड में स्थित श्री सुसेश्वर गणेश भगवान की अद्‌भुत स्वंय भू प्राकृतिक प्रतिमा है। जो अपना रजत जयंती वर्ष मना रही है।

श्री सुसेश्वर विकास समिति लगातार विकास के कामों के लिये प्रयत्नशील है, विगत वर्ष श्री सुसेश्वर विकास समिति द्वारा आशीर्वाद पत्रिका का प्रकाशन किया, जो सराहनीय रहा, पत्रिका के माध्यम से भगवान श्री गणेश के विभिन्न धार्मिक जानकारियाँ भक्तों तक पहुँची, श्री सुसेश्वर गणेश आशीर्वाद पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो जिससे भक्तों को भगवान सुसेश्वर का अशीर्वाद मिलता रहे, इसी आशय के साथ ....

Dinesh Singh

दिनेश सिंह सिंगरौल
(पार्षद)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

*** श्री गणेश जी की आरती ***

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ॥
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥ जय गणेश॥

एक दंत दयावंत चार भुजाधारी॥
माथे सिंदूर सोहें मूस की सवारी॥ जय गणेश॥

हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा॥
लड्डूवन का भोग लागे संत करें सेवा॥ जय गणेश॥

अंधन को आँख देत कोढ़िन को काया॥
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥ जय गणेश॥

रिद्धी देवे सिद्धी देवे बुद्धि देवे देवा॥
संकट में सहाय करें जय गणेश देवा॥ जय गणेश॥

दीनन की लाज राखो शम्भु सुत वारी॥
कामना को पूर्ण करो जग बलिहारी॥ जय गणेश॥

।। श्री गणेशाय नमः ।।

॥ अथर्वशीर्ष पाठ ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिः । व्यशेम देवहितं यदायुः ।।1 ।।
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।2 ।।
ॐ शान्ति ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

अथ गणपति अथर्वशीर्ष

॥ ॐ नमस्ते गणपत्ये ॥
त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि ॥ त्वमेव केवलं कर्ताऽसि ॥
त्वमेव केवलं धर्ताऽसि ॥ त्वमेव केवलं हर्ताऽसि ॥
त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि ॥ त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम् ॥१ ॥

ऋतं वच्मि ॥ सत्यं वच्मि ॥२ ॥
अव त्वं मां ॥ अव वक्तारं ॥
अव श्रोतारं ॥ अव दातारं ॥
अव धातारं ॥अवानूचानमव शिष्यं ॥
अव पश्चात्तात् ॥ अव पुरास्तात् ॥
अवोत्तरात्तात् ॥ अव दक्षिणात्तात् ॥
अवचोर्ध्वात्तात् ॥ अवाधरात्तात् ॥
सर्वतो मा पाहि पाहि समंतात् ॥३ ॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मय: ॥
त्वमानंदमयस्त्यं ब्रह्ममय: ॥
त्वं सच्चिदानंदाद्वितीयोऽसि ॥
त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मामि ॥
त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥4 ॥
सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते ॥
सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति ॥
सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति ॥
सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति ॥
त्यं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नम: ॥
त्वं चत्वारिवाकपदानि ॥५ ॥

त्वं गुणत्रयातित: त्वमवस्थात्रयातीत: ॥
त्वं देहत्रयातीत: ॥ त्वं कालत्रयातीत: ॥
त्वं मूलाधारथितोऽसि नित्यं ॥
त्वं शक्तित्रयात्मक: ॥
त्वां योगिनो ध्यायंति नित्यं ॥
त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्तवं ॥
रूद्रस्तवं इन्द्रस्तवं अग्निस्तवं
वायुस्तवं सूर्यस्तवं चन्द्रमास्तवं
ब्रह्मभूर्भुव: स्वरोम् ॥६ ॥

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादि तदनंतरं ॥
अनुस्वार: परतर: ॥ अर्धेन्दुलसितं ॥
तारेणा ऋद्धं ॥ एतत्तव मनुस्वरूपं ॥
गकार: पूर्वरूपं ॥ अकारो मध्यमरूपं ॥
अनुस्वारश्चान्त्यरूपं ।। बिन्दुरूत्तरूपं ।।
नाद: संधानं ।। संहितसँधि ।।

सैषा गणेशविद्या ॥ गणकऋषिः
निचृद्गायात्रीच्छंदः ॥ गणपतिर्देवता ॥
ॐ गं गणपतये नमः ॥७॥

एकदंताय विद्महे।
वक्रतुण्ड धीमहि ॥
तन्नो दंती प्रचोदयात् ॥८॥

एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम् ॥
रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मृषकध्वजम् ॥
रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् ॥
रक्तगंधाऽनुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ॥
भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् ॥
आविर्भूतं चसृष्टयादौ प्रकतेः पुरूषात्परम् ॥
एवं ध्यायति यो नित्यं ॥ स योगी योगिनां वरः ॥९॥

नमो व्रातपतये। नमो गणपतये ॥
नमः प्रमथपतये।
नमस्तेऽस्तु लंबोदरायैकदंताय।
विघ्नाशिने शिवसुताय।
श्रीवरदमूर्तये नमो नमः ॥१०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते ॥
स ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥
स सर्वतः सुखमेधते ॥
स सर्व विघ्नैर्नबाध्यते ॥
स पन्चमहापापात्प्रमुच्यते ॥११॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ॥
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ॥
सायंप्रातः प्रयुंजानो ऽपापो भवति ॥
सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति ॥
धर्मार्थकाममोक्षं च विंदति ॥१२॥
इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् ॥
यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान्भवति ॥
सहस्रावर्तनात् यं यं काममधीते ॥
तं तमनेन साधयेत् ॥१३॥

अनेन गणपतिमभिषिंचति स वाग्मी भवति ॥
चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान् भवति ॥
इत्यथर्वणवाक्यं ॥ ब्रह्माद्यावरणं विद्यात् ॥
न बिभेति कदाचनेति ॥१४॥

यो दूर्वांकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति ॥
यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति ॥
स मेधावान् भवति ॥ यो मोदकसहस्रेण यजति ॥
स वान्छित फलमवाप्नोति ॥
यः साज्यसमिभ्दिर्यजति ॥
स सर्वं लभते स सर्वं लभते ॥१५॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा
सूर्यवर्चस्वी भवति ॥
सूर्यगृहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ ॥
वा जप्त्वा सिद्धमंत्रों भवित ॥
महाविघ्नात्प्रमुच्यते ॥ महादोषात् प्रमुच्यते ॥
महापापात् प्रमुच्यते ॥ स सर्वविभ्दवति स सर्वविभ्दवति ॥
य एवं वेद इत्युपनिषद् ॥१६॥

ॐ सहनाभवतु ॥ सहनौभुनक्तु ॥
सह वीर्यं करवावहे ॥ तेजस्विनावधीत्तमस्तु ॥
मा विद्धिषावहे ॥

। अथर्व वेदीय गणपत्युपनिषद् समाप्त।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः ।
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैगैस्तुष्टुवां सस्तनूभिः ॥
व्यशेमद्धिवहित यदायुः ॥ न इन्द्रो वृद्धश्रवाः ॥
स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः ॥
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२ ॥
ॐ शांतिः शांति !!शांति!!!

हे परमात्मन् तीनों पापों की निवृत्ति हो ।शुभम्॥
॥ इति श्री गणपत्यथर्वशीर्ष समाप्तम्॥

संकटनाशन गणेश स्तोत्रम्

॥ नारद उवाच ॥

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायु:कामार्थसिद्धये ।।१ ।।

प्रथमं वक्रतुण्ड च एकदन्त द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।।२ ।।

लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेंद्र धूम्रवर्ण तथाष्टमम् ।। ३ ।।

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपति द्वादशं तु गजाननम् ।। ४ ।।

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं य: पठेन्नर: ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो ।। ५ ।।

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ।। ६ ।।

जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासै: फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धि च लभते मात्र संशय: ।। ७ ।।

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा य: समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादत: ।। ८ ।।

इति श्री नारदपुराणे संकटनाशन गणेशस्त्रोतं सम्पूर्णम् ।।

श्री शिव जी की आरती

जय शिव ओंकारा, भज हर शिव ओंकारा,
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांङ्गी धारा।

एकानन चतुरानन पंचानन राजै,
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजै।

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सौहै,
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन मन मोहे।

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी,
चंदन मृगमद सोहे भाले शुभकारी।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे,
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।

करके मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूलधर्ता,
सुखकारी दुखहारी जगपालन कर्ता।

ब्रह्मा, विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका।

काशी में विश्वनाथ विराजे,
नंदी ब्रम्हचारी इत उत दर्शन पावत,
इत उत भोग लगावत महिमा अति भारी।

त्रिगुण शिव जी की आरती जो कोई नर गावे,
कहत शिवानंद स्वामी सुख सम्पत्ति पावे।

श्री देवीजी जी की आरती

जगजननी जय! जय!! (माँ जगजननी जय! जय!!)

भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय ! जय!! जग

तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा । सत्य सनातन सुन्दर पर शिव सुर-भूपा ।।1।। जगजननी

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी। अमल, अनन्त अगोचर अज आनँदराशी ।।2।। जग

अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी। कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर सँहारकारी ।।3।। जग

तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया। मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ।। 4।। जग

राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा । तू वाछाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ।।5।। जग

दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा। अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा ।। 6।। जग

तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू। तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवविलसिनि तू ।।7।। जग

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाधारा। विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा ।। 8।। जग

तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना। रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ।। 9 ।। जग

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे। कालातीता काली, कमला तू वरदे ।। 10।। जग

शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी। भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले वेदत्रयी ।। 11।। जग

हम अति दीन दुखी माँ! विपत-जाल घेरे। हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ।। 12 ।। जग

निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै। करूणा कर करूणामयि! चरण-शरण दीजै ।। 13।। जग

श्री हनुमान जी की आरती

आरति कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।

जाके बल से गिरिवर काँपे। रोग दोष जाके निकट ना झाँपें।।

अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतत के प्रभु सदा सहाई ।।

दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये ।।

लंका सौ कोटि समुद्र की खाई । जात पवनसुत बार न लाई।।

लंका जारि असुर सब मारे। सियारामजी के काज सँवारें ।।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। लाय संजीवन प्राण उबारे।।

पैठि पताल तोरि यम कारे। अहिरावण की भुजा उखारे।।

बाँयें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संत जन तारे ।।

सुर नर मुनि आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारें ।।

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई ।।

जो हनुमान जी की आरति गावैं। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै ।।

लँक विध्वंस किये रघुराई। तुलसीदास ने कीरत गाई।।

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कलाँ की ।।

श्री दुर्गा जी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गोरी ।
तुमको निशि दिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ।। टेक
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को ।
उज्जवल से दोउ नैना चन्द्रबदन नीको ।। जय
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
रक्तपुष्प गलमाला कंठन पर साजै ।। जय
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्परधारी ।
सुर-नर मुनिजन सेवक तिनके दुःखहारी ।। जय
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ।। जय
शुम्भ निशुम्भ विडारे महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना निशि दिन मदमाती ।। जय
चौंसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरूं ।
बाजत ताल मृदंगा अरू बाजत डमरू ।। जय
तुम हो जग की माता तुम ही हो भर्ता ।
संतन की दुःखहर्ता सुख सम्पत्तिकर्ता ।। जय
भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्परधारी ।
मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी ।। जय
कंचन थार विराजत अगर कपूर बाती ।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति ।। जय
श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानंद स्वामी सुख-सम्पत्ति पावै ।। जय

नर्मदाष्टकम्

सविन्दु-सिन्धु-सुस्खलत्तरंङ्गभंङ्ग-रञ्जितं, द्विषत्सु पापजात-जातकारि-वारिसंयुतम् ।
कृतान्त-दूतकालभूत-भीतिहारि वर्मदे, त्वदीयपादपंङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ।।1।।

त्वदम्बु-लीनदीन-मीन-दिव्यसम्प्रदायकं, कलौ मलौघ-भारहारि सर्वतीर्थनायकम् ।
सुमत्स्य-कच्छ-नक्र-चक्र चक्रवाक शर्मदे, त्वदीयपादपंङ्कजं --- ।।2।।

महागभीर-नीरपूर-पापधूत भू-तलं, ध्वनत्-समस्त-पातकारि-दारितापदाचलम् ।
जगल्भयेमहाभये-मृकण्डुसूनु हर्म्यदे, त्वदीयपादपंङ्कजं --- ।।3।।

गतं तदैव में भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा, मृकण्डसून-शौनकासुरारिसेवि सर्वदा ।
पुनर्भवाब्धि-जन्मजं भवाब्धि दुःखवर्मदे, त्वदीयपादपंङ्कजं --- ।।4।।

अलक्ष-लक्ष-किन्नराम रासुरादि पूजितं, सुलक्ष-नीर-तीर-धीर पक्षि-लक्षकूजितम् ।
वशिष्ठशिष्ट-पिप्पलाद-कर्दमादि शर्मदे, त्वदीयपादपंङ्कजं --- ।।5।।

सनत्कुमार-नाचिकेत-कश्यपादि-षट्पदे- धृत स्वकीय मानसेषु नारदादि षट्पदैः ।
रवीन्दु रन्तिदेव देवराज कर्म, शर्मदे, त्वदीयपादपंङ्कजं --- ।।6।।

अलक्षलक्ष-लक्षपाप लक्षसार-सायुधं, ततस्तु जीव-जन्तुतन्तु भुक्ति मुक्ति दायकम् ।
विरञ्चि-विष्णु-शङ्कर-स्वकीयधाम वर्मदे, त्वदीयपादपंङ्कजं --- ।।7।।

अहोऽमृतं स्वनं श्रुतं महेशकेश जातटे, किरात-सूत-वाडवेषु पण्डिते शठे नटे, ।
दुरन्त पाप-ताप हारि-सर्वजन्तु शर्मदे, त्वदीयपादपंङ्कजं --- ।।8।।

इदन्तु नर्मदाष्टकं त्रिकालमेव ये सदा, पठन्ति ते निरन्तरं न यान्ति दुर्गतिं कदा ।
सुलभ्य देह-दुर्लभं महेशधाम गौरवं, पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौखम् ।।
त्वदीयपादपंङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ।।9।।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

*** श्री गणेश प्रार्थना ***

कर्पूर गौरं करूणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्रहारम
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि ॥१॥

मंदार माला कुलितालि कायै, कपाल मालाङ्कित शेखराय।
दिव्याम्बराये च दिगम्बराय, नमः शिवायै च नमः शिवाय॥२॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् ममदेव देव॥२॥

दाता के दरवार में, सभी खड़े हाँथ जोड़॥
देने वाला एक है, माँगे लाख करोड़ ॥३॥

आज भी तेरा आसरा, कल भी तेरी आस।
घड़ी-घड़ी तेरा आसरा, दे प्रभु बारम्वार॥४॥

प्रभु इतना धन दीजिये, कि जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, कोई अतिथि ना भूखा जाय॥५॥

रहे सनातन धर्म ये, कोढ कपट मिट जाये।
ज्यों पानी का बुलबुला, रह ना सके छिन माय॥६॥

आदि अन्त और मध्य में, जिस का हो परिचाय।
डंका बाजे धर्म का, होवे जय-जय कार॥७॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

*** श्री गणेश दैनिक प्रार्थना ***

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों मे।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ॥१ ॥
मेरा निश्चय बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाउँ मै।
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥१ ॥
जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, जो जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण-दोष समर्पित हों, भगवान तुम्हारे हाथों में ॥१ ॥
यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तब चरणों का पुजारी बनूँ ॥१ ॥
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।
जब-जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ ॥१ ॥
फिर अंत समय में प्राण तजूँ, निराकार तुम्हारे हाथों में।
मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥१ ॥
अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ॥१ ॥
यह विनती है पल-पल छिन-छिन ।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥१ ॥

जय कारा

सियावर रामचन्द्र की जय, उमापति महादेव की जय ॥१ ॥
पवनसुत हनुमान की जय, विन्द्रावन कृष्ण चन्द्र की जय ॥१ ॥
गणेश भगवान की जय, बोलो भाई सब संतों की जय ॥१ ॥

Naidu's दिल्ली की गली पराठे वाली

रेग्यूलर पराठा (2 पीस)

आलू पराठा	-	60/-
ओनियन पराठा	-	60/-
पापड़ पराठा	-	70/-
मिक्स वेज पराठा	-	70/-
मूली पराठा	-	70/-
गोभी पराठा	-	70/-
आलू मटर पराठा	-	70/-
मैथी पराठा	-	70/-
पुदीना पराठा	-	70/-
भुजिया सेव पराठा	-	70/-
आलू भुजिया पराठा	-	70/-
पनीर पराठा	-	80/-
पालक पनीर पराठा	-	80/-
चिली पनीर पराठा	-	80/-
चीज पराठा	-	100/-

स्पेशल पराठा (2 पीस)

कार्न मिस्सी पराठा	-	80/-
मैथी बाजरा पराठा	-	80/-
आलू बाजरा पराठा	-	80/-
मैथी ज्वार पराठा	-	80/-
आलू शिमला मिर्च पराठा	-	80/-
वेज कबाब रोज पराठा	-	80/-
चीज धनिया पराठा	-	100/-

पहाड़गंज स्पेशल नान (2 पीस)

चूर-चूर आलू नान	-	80/-
चूर-चूर गोभी नान	-	80/-
चूर-चूर पनीर नान	-	90/-
गार्लिक नान	-	90/-
पनीर पुदीना नान	-	90/-
चीज नान	-	100/-

अमृतसरी स्पेशल कुल्चा (2 पीस)

अमृतसरी कुल्चा	-	80/-
अमृतसरी आलू कुल्चा	-	80/-
अमृतसरी पनीर कुल्चा	-	90/-
अमृतसरी आलू मिक्स वेज कुल्चा	-	90/-

वेज पुलाव 80/-

दाल मखनी/छोले एवं रायता

पार्सल सुविध उपलब्ध

प्रति पार्सल पैकिंग चार्ज 10/- अतिरिक्त

सिविक सेंटर, चौपाटी के सामने, जबलपुर

मोबाईल - 9826319579, 9617894141, 7354306446

गणेश पर्व की हार्दिक हार्दिक शुभकामनाऐं :-

Shantilal Jain

Raymond

WHOLESALE DEALER

SHREE TEXTORIUM

Azad Chowk, Gorakhpur, Jabalpur
Phone : 4016249 (S), 4038544 (R)
Mob. : 98261-10701, 98263-53497 (Pradeep)
e-mail : shree_text@mantrafreenet.com

गणेश पर्व की हार्दिक हार्दिक शुभकामनाऐं :-

Sandeep Jain
Pradeep Jain

Sampat Saree Emporium

GORAKHPUR BAZAR, JABALPUR (M.P.)
Tel. : (S) 4017033, 2400503

WORLD *of* TITAN

Sampat Lal & Sons

GORAKHPUR BAZAR, JABALPUR (M.P.)
Tel. : (S) 2406457

गणेश पर्व की हार्दिक हार्दिक शुभकामनाऐं :-

एम. मिश्रा

सदस्य अभिकर्ताओं के लिए अध्यक्ष क्लब

भारतीय जीवन बीमा निगम

नगर शाखा क्र. 3, नागरपुर रोड, मदन महल,
एल.आइ.सी. मण्डल कार्यालय के सामने, जबलपुर
निवास : 1999/1, एकता विहार, रतन नगर, मदन महल रोड, जबलपुर
टेली.: ऑ. 2671434, 2671364 नि. 2425661, मो.: 98270-98031

M. Mishra

Member of the Chairman's Club of Agents

Life Insurance Corporation of India

CBO-3, Nagpur Road, Madan Mahal,
Opposite LIC Divisional Office, Jabalpur
Resi. : 1999/1, Eakta Vihar, Ratan Nagar Road
Madan Mahal, Jabalpur
Tel. : (O) 2671434, (R) 2671364, (M) 98270-98031

गणेश पर्व की हार्दिक हार्दिक शुभकामनाऐं :-

KASTURI
CITY

Project by
PROMOTERS & DEVELOPERS

BALAJI ASSOCIATERS

Office Add.- 616, Sneh Nagar Chowk, Jabalpur
Site Ad. - Behind kachnaar City, Raingwa, Jabalpur
Mob.: 98264468048, 7587523739
e-mail : kasturicity@gmail.com

गणेश पर्व की हार्दिक हार्दिक शुभकामनाऐं :-

Builder & Colonizer
Proprietor Goodluck Apartment

Shivcharan Dixit
(Gudda Bhaiya)
Mob. : 9826191116, 9303088765

Nishant Dixit
Mob. : 97133-68123

Special Features :-

Main Entry Gate	: Fully Decorated R.C.C. Main Entry Gate
Boundary Wall	: Brick Designed Boundary Wall
Roads	: R.C.C. Concrete Roads
Drainage	: Dranage made by R.C.C. & Bricks
Out Side Electricity	: Street Lights, Electric Poles & Transformers
Garden	: Well Maintained & Decorative Garden
Atmosphere	: Peace & Pollution less Atmosphere

a project by : **Goodluck Apartment**

Divya Homes

Well Finished Colony

: Approved by :
L.I.C. of India & Nationalised Bank

-: Main Office :-
Goodluck Apartment
Chamber No. 18, Narmada Road, Jabalpur

-: Site Office :-
Divya Homes, Danav Baba
Badanpur, Near Sainik Society, Jabalpur

संतोष कोष्टा

कार ड्राईविंग स्कूल

: निवास :
रतन नगर, जबलपुर
मोबा.: 9406759916, 9826750268

गणेश पर्व की हार्दिक हार्दिक शुभकामनाऐं :-

PAL
Institute

- Class -

9th, 10th, 11th, 12th

All Science Subject

ICSE
CBSE
MP Board

: ADDRESS :

191, Ekta Bihar, Ratan Nagar, Jabalpur (M.P.)
Contact : 9893107668, 9826642565, 9424677456

ADVOCATE

वीरेन्द्र कुमार साहू

अधिवक्ता, बी.कॉम., एल.एल.बी.

• आयकर • वेटकर • सर्विस कर सलाहकार

: कार्यालय :

9, प्रथम तल, गुडलक अपार्टमेंट (रामकुमारी टॉवर्स), श्रीनाथ की तलैया, जबलपुर

: निवास :

जी.टी.-41, गढ़ा पुरवा, पानी की टंकी के पास, जबलपुर (म.प्र.)
मोबा.: 9826137147, 9303337147

श्री गणेश पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें...

STH

SARABJEET Tent House

DECORATOR'S & CATERER'S

390, Gupeshwar Road, Madan Mahal, Jabalpur
Ph. : (O) 6451563, (R) 3298632. Mobile : 9300100663

Rajkumar Brass Band

Sadar Bazar, Jabalpur (M.P.)
Mob. : 9329604487, 9301124158, 9827310930
e-mail : rajkumarbank.mp@gmail.com
website : www.rajkumarband.webs.com